Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 4 | (Oct – Dec 2025)

नाथपंथ और गोरख-साहित्य

कृष्ण कुमार मुक्कड़ [1], डॉ. अखिलेश चास्टा [2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
[2] शोध निर्देशक, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
महाराणा प्रताप राजकीय पी.जी. महाविद्यालय चितौड़गढ़।

सारांश

दिए गए आलेख में नाथपंथ और गोरखनाथ के साहित्यिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक योगदान का विस्तृत विवेचन किया गया है। नाथ परंपरा को एक प्राचीन शैव-आधारित योगपरक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसके आदि प्रवर्तक आदिनाथ (शिव) माने जाते हैं तथा जिसे मत्स्येंद्रनाथ और गोरखनाथ ने व्यवस्थित एवं व्यापक रूप प्रदान किया। गोरखनाथ ने बौद्ध वज्रयान और वाममार्गी साधनाओं की प्रतिक्रिया स्वरूप हठयोग, ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय-निग्रह और मानसिक-शारीरिक शुचिता पर बल दिया। गोरखनाथ का योगदान केवल धार्मिक या साधनात्मक नहीं, बल्कि साहित्यिक और भाषिक भी है। उन्होंने खड़ी बोली और सधुक्कड़ी जैसी लोकाभिमुख भाषा का प्रयोग कर हिंदी को साहित्यिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया। उनकी रचनाओं में गुरु-महिमा, योग-साधना, कुण्डलिनी जागरण, नाड़ी साधना, निर्गुण ब्रह्म की अवधारणा, उलटबांसी, लोकोक्तियाँ और सामाजिक पाखंड का विरोध प्रमुख विषय हैं। गोरखबानी का संकलन नाथ साहित्य की प्रामाणिक धरोहर माना जाता है। नाथ साहित्य ने लोकभाषाओं, लोकसंस्कृति और संत काव्य पर गहरा प्रभाव डाला तथा भक्तिकालीन ज्ञानमार्गी परंपरा को दिशा प्रदान की। सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास और शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते हुए गोरखनाथ की वाणी ने निम्न और उपेक्षित वर्गों को भी वैचारिक संबल दिया। इस प्रकार नाथपंथ और गोरख-साहित्य भारतीय ज्ञान-परंपरा, योग-दर्शन और हिंदी साहित्य के विकास में एक स्थायी, प्रासंगिक और प्रेरणादायक भूमिका निभाते हैं।

मुख्य शब्द: नाथपंथ, नाथ साहित्य, हठयोग, योग साधना, लोकभाषा, निर्गुण ब्रह्म, संत परंपरा

मूल आलेख

नाथ परम्परा एक प्राचीन और महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आंदोलन है, जिसका भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव है। नाथ संत परंपरा सनातन धर्म से संबंधित है जो शैव दर्शन के एकदम नजदीक है। आदिनाथ शिवजी ही माने गए है। नाथ पंथ के आदि प्रवर्तक आदिनाथ या स्वयं शिव माने जाते हैं। मत्स्येंद्रनाथ इन्हीं के शिष्य थे। इसी परम्परा में बाद में मत्स्येंद्रनाथ के ही शिष्य गोरखनाथ की अपने गुरु से यह ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्होंने अपने गुरु का उद्धार किया। "गोरखनाथ के जन्म स्थान एवं उनकी जीवन परिस्थितियों के संबंध में कई तरह की दंत कथाएँ प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि इनका जन्म हिमालय क्षेत्र के आस-पास हुआ होगा। इनके पक्षधरों का तर्क है वहाँ बौद्ध मत के साथ-साथ शिव पूजा भी प्रचलित रही हैं। क्योकि पंजाब के उत्तरी हिमालय भाग में कनफटे योगी मिलते हैं। जो शिव का पूजन करते हैं।"[1] वास्तव में गोरखनाथ ने नाथ सम्प्रदाय को व्यवस्थित किया तथा उसे व्यापक रूप प्रदान किया। उनका मानना था- "जोई जोई पिंडे, सोई ब्रह्मांडे "[2] अर्थात् जो शरीर में है वही ब्रह्मांड में हैं। नाथ शब्द अति प्राचीन है। वैदिक साहित्य में नाथ शब्द कर्ता, ज्ञाता तथा सृष्टि के निमित्त रुपों में हुआ है। गोरक्ष सिद्धांत के अनुसार नागार्जुन, जडभरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, भीमनाथ, गोरक्षनाथ, चर्पटनाथ, जलंधरनाथ, मलयार्जुन आदि प्रमुख नाथ हुए "[3]

बौद्धों की वज्रयान शाखा की प्रतिक्रिया के फलस्वरुप नाथपंथ का विकास हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल इसका समय 13वीं शताब्दी मानते हैं। नवीन खोजों के आधार पर भी 13वीं शताब्दी का आरम्भ अधिक प्रबल माना जाता है जब गोरखनाथ ने अपना साहित्य लिखा। कुछ विद्वान, जैसे पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, गोरखनाथ का समय ग्यारहवीं शताब्दी मानते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "गोरखनाथ का नाथपंथ बौद्धों की वज्रयान शाखा से ही निकला है। नाथों ने वज्रयानी सिद्धों के विरुद्ध मद्य, मॉस व मैथुन के त्याग पर बल देते हुए ब्रह्मचर्य पर जोर दिया। साथ ही शारीरिक-मानसिक शुचिता अपनाने का संदेश दिया "[4]

10वीं सदी के अन्त में शैव धर्म एक नये रुप में आरम्भ हुआ जिसे 'योगिनी कौल मार्ग', 'नाथ पंथ' या हठयोग कहा गया। इसका उदय बौद्ध-सिद्धौ की वाममार्गी भोग-प्रधान योगधारा की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। नाथ पंथ के प्रवर्तक मत्स्येन्द्र नाथ व गोरखनाथ दोनों को ही माना जाता है। नाथ संप्रदाय में नाथ ब्रह्मचारी रहते थे, अतः इनके लिए नारी का संग वर्जित था। मान्यता है कि गोरखनाथ एक स्थान पर कहते हैं कि जो स्वर्ण रुपी नारी का परित्याग कर देता है वहीं संसार में निर्भय होकर योग सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है।

नाथ संप्रदाय की धुरी गोरखनाथ है। जिनका हिंदी साहित्य के विकास में एक अद्वितीय और गहरा प्रभाव रहा है। भारत के भक्ति आन्दोलन में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान तो था ही, उसके साथ ही उन्होंने हिंदी भाषा को एक साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तत्कालीन समय में गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में खड़ी बोली का प्रयोग किया, जो एक नई बात थी। मिश्र बन्धुओं ने गोरखनाथ को हिंदी गद्य का जनक बताया। उनकी भाषा तत्कालीन समाज के लिए सरल, सीधी और आम लोगों के लिए सुलभ थी। इस प्रयोग ने हिंदी को बोलचाल की भाषा से निकालकर साहित्यिक स्तर पर लाने में मदद की। उन्होंने खड़ी बोली को धार्मिक और दार्शनिक विचारों को व्यक्त करने का एक प्रभावी माध्यम बनाया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "नाथ पंथ या नाथ सम्प्रदाय के सिद्धमत, सिद्ध मार्ग, योग मार्ग, योग सम्प्रदाय, अवधूत मत एवं अवधूत सम्प्रदाय के नाम भी प्रसिद्ध है "[5] राहुल सांस्कृत्यायन, नाथ साहित्य को सिद्धों की परम्परा का विकसित रुप माना है।

गोरखनाथ का काल साम्प्रदायिक दृष्टि से बहुत अव्यवस्थित था। वैदिक समाज की वर्णाश्रम व्यवस्था तथा चार प्रमुख वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैष्य, शूद्र और पौराणिक व्यवस्था धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की अवधारणा की विस्तृत विवेचना का विस्तार मिलता था। आगम और निगम परम्परा मिलती थी। गोरखनाथ ने हठयोग साधना पर बल दिया, जिसके अंतर्गत गुरु महिमा, योग-परक साधना, ब्रह्मानंद की स्थापना, नारी के प्रति दृष्टिकोण, शून्य की कल्पना, नाड़ी साधना आदि इनके काव्य के प्रतिपाद्य विषय है। मन, प्राण, शुक्र, वाक् और कुण्डलिनी इन पाँचों के संयमन को राजयोग, हठयोग, वज्रयान, जपयोग या कुंडली योग कहा जाता है।

गोरखनाथ की हिंदी रचनाओं के संकलन और सम्पादन का सर्वप्रथम व्यवस्थित प्रयत्न डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने किया। पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने गोरखनाथ के साहित्य की सामाग्री को व्यवस्थित कर उसे 'गोरखबानी' संग्रह नाम से 1942 में प्रकाशित कराया। गोरखबानी नाथ साहित्य की प्रथम प्रामाणिक रचना है। नाथ योगियों की रचनाओं का मूल्यांकन, भाषा, काव्यरुप, छन्द, रचनाशैली, योग एवं साधनात्मक पद्धति, शब्दावली, सामाजिक दृष्टिकोण आदि दृष्टियों से किया जाता रहा। नाथों में सर्वाधिक महिमाशाली होने के कारण ही उनकी रचनाएँ सर्वाधिक विचारणीय रहीं।

गोरखनाथ लोक भाषा में स्थापित धर्म साधना एवं साहित्य के अप्रतिम व्यक्तित्व है। जिन्होंने लोकजीवन, लोकसंस्कृति एवं लोकभाषा को अनवरत रुप से समृद्ध किया है। इनकी रचनाएँ संस्कृत, अवधी, ब्रज, भोजपुरी, खड़ी बोली में प्राप्त होती है लेकिन नाथ पंथ के योगियों की बानियाँ लोकभाषाओं में प्रसारित हुईं। जिसने संत साहित्य को प्रेरणा दी तथा योगियों के दोहा और पद शैली को बाद के सभी हिंदी कवियों ने अपनाया। विशेषकर लोक भाषाओं के संवर्धन में

नाथ पंथ के सिद्ध योगियों द्वारा वाचिक और लिखित लोक साहित्य में अप्रतिम योगदान दिया। इसलिए ऋषि परम्परा में संस्कृत के आदिकवि वाल्मीकि का साहित्य में जो स्थान है, वही हिंदी साहित्य में महायोगी गोरखनाथ का है। इसलिए हजारीप्रसाद ने गोरखनाथ को अपने युग का सबसे बड़ा धार्मिक नेता माना है।

"लोकभाषा संस्कृति को नाथ पंथ के योगियों ने जितना समृद्ध व सशक्त बनाया शायद ही कोई पंथ या संप्रदाय अथवा भारत के अन्य धार्मिक आध्यात्मिक संगठन ने किया हो। हिंदी भाषा और उसके विकास में तथा संपूर्ण भारत की संत परंपरा के विकास में गोरखनाथ का स्थान सर्वप्रमुख है। लोककथाओं, दंतकथाओं और प्रवादों के अतिरिक्त पद्य और गद्य में रचित नाथ संप्रदाय विशेषतः गुरु गोरखनाथ की दार्शनिक मान्यताएँ विशिष्ट स्थान रखती हैं। गोरखनाथ अपने काल के परम शक्तिशाली महात्मा थे। उनकी रचनाओं का जो रूप उपलब्ध है, वे भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं, गोरखनाथ जी महाराज ने संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं में रचनाएँ लिखकर साहित्य जगत को अमूल्य निधि प्रदान की है जो आज भी कवि सन्त महात्माओं का मार्गदर्शन करती है।"[6] गोरखनाथ ने ईश्वरवाद की निश्चित अवधारणा स्थापित की थी। इनकी सगुण ब्रह्म के प्रति आस्था न होकर अलख निरंजन (निर्गुण ब्रह्म) के प्रति आस्था थी। इस पंथ में अखण्ड ब्रह्मचर्य एवं गुरु के प्रति अगाध सम्मान, चारित्रिक दृढता, मानसिक पवित्रता और आचरण की शुद्धता के गुण विधमान थे।

गोरखनाथ ने हठयोग में नाड़ी साधना को विशेष बल दिया। शरीर की 72 हजार नाड़ियों में से सिर्फ सुषुम्ना नाड़ी को ही शक्ति को धारण करने वाली माना गया। गोरखनाथ के अनुसार इडा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीनों नाडियों का संगम ब्रह्मरंध्र है जो मस्तिष्क के बीच में स्थित रहता है। ब्रह्मरंध द्वार है, जो बंद रहता है। साधना से ही इसे खोला जा सकता है। ब्रहमरंध्र खुलते ही अमृत रस झरता है, जिससे योगी को अमरत्व की प्राप्ति होती है।

नौलख पातरि आगे नाचें पीछे सहज अखाड़ा।

ऐसे मन लै जोगी खेले तब अंतरि बसे भंडारा।"[7]

गोरख साहित्य में उल्लेखित लोकोक्तियों का वर्णन किया गया है। हिंदी के आदिकालीन समाज में स्वेच्छाचार, आडम्बर और अंधविश्वास बढ़ता जा रहा था। अतः वज्र साधकों और सहजयानियों की अपार भीड़ के बीच में से संयत और अनुशासित जीवन का मार्ग गोरखनाथ जी ने ढूंढ़ निकाला। जिससे शुद्ध शरीर और कर्मठ एवं अनुशासित जीवन का यथार्थ रुप सामने आया। ऐसा महान व्यक्तित्व आज महात्माओं और कवियों के लिए पथ प्रदर्शक और मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहा है। "यदि आज के समय में किसी भी कवि अथवा संत कवि की प्रासंगिता है, तो वह महायोगी गोरखनाथ जी महाराज हैं। उनकी रचनाएँ एवं लोकोक्तियाँ आज भी लोकजीवन में सुनने को मिलती हैं, यह गोरखनाथ के प्रभाव का ही प्रमाण है।"[8]

गोरखनाथ की भाषा को सधुक्कड़ी भाषा का प्रारंभिक रुप माना जाता है। यह भाषा कई क्षेत्रीय भाषाओं (जैसे पंजाबी, राजस्थानी, और ब्रज) के तत्वों को मिलाकर बनी थी। इस भाषा ने संतों को एक ऐसे माध्यम का उपयोग करने की अनुमति दी जो विभिन्न क्षेत्रों के लोगों द्वारा समझा जा सके। सधुक्कड़ी भाषा का यह प्रयोग बाद में कबीर और अन्य संतों ने भी अपनाया, जिससे हिंदी साहित्य की पहुंच और प्रभाव का विस्तार हुआ। "विश्व का प्रत्येक स्थापित धर्म अपने आरम्भिक अवस्था में पंथ ही रहा हैं कालान्तर में वह सम्प्रदाय का स्वरुप धरण करते हुए धर्म संघ या एक्लेसिया के रुप में परिवर्तित हुआ हैं। धर्म संघ का क्षेत्र सम्प्रदाय और पंथ की तुलना में आधिक विस्तृत एंव व्यापक होता हैं, जबकि सम्प्रदाय का क्षेत्र पंथ की अपेक्षा अधिक विस्तृत होता हैं।"[9] गोरखनाथ की वाणी में एक ओर ईश्वरवाद की निश्चित धारणा उपस्थित की गई है, वहीं दूसरी और विकृत करने वाली समस्त परम्परागत रुढ़ियों पर भी आघात किया। जीवन को अधिक से अधिक संयम और सदाचार के अनुशासन में रखकर आत्मिक अनुभूतियों के लिए सहज

मार्ग की व्यवस्था करने का शक्तिशाली प्रयोग गोरखनाथ ने किया है। गोरखनाथ की सरल और सहज भाषा, प्रतीकात्मकता, संध्या भाषा, अलटबांसी, गुरु महिमा, योग और साधना का वर्णन मिलता है। सामाजिक और धार्मिक पाखंडों का विरोध, नैतिक उच्च आचरण, जागरूकता और जन-कल्याण की भावना पर बल दिया गया है। जो आज भी समाज में सद्भाव और शांति बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में उलटी बानी या उलटबांसी (विपरीत प्रतीकात्मक भाषा) का भी प्रयोग किया। इसमें वे गूढ़ दार्शनिक और आध्यात्मिक सत्यों को आम प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करते थे। इस प्रकार की प्रतीकात्मक भाषा ने हिंदी काव्य को गहराई और विविधता प्रदान की। कहा जा सकता है कि नाथ पंथ साहित्य और उसकी भाषा ही भारतीय भाषाओं के विकास की आधरशिला बनी। भाषा के साथ भारत की आध्यात्मिक चेतना को आम जनता तक पहुँचाया। परवर्ती संतों ने गोरखनाथ के साहित्य का अनुकारण कर अपने साहित्य का सृजन किया। “गोरखनाथ की महत्त्वपूर्ण देन उलटबासियाँ हैं। उलटबासियाँ को उलटा वेद, उल्टा पथ, या उलटी चर्चा भी कहा गया है। उपमानों का विरोधात्मक योजना को केंद्र मानकर उलटबासियों की चमत्कारपूर्ण शैली यद्यपि सिद्ध काव्य से प्रारम्भ हो गई थी। किन्तु गोरखनाथ की रचनाओं में सर्वाधिक उलटबासियाँ मिलती हैं। लोकोक्तियाँ गोरखनाथ ने लोकभाषा में सूक्तियाँ रचकर भाषा सम्प्रेषण को सुगम बना दिया है।”[10]

नाथ पंथ की अपरिगृह, इन्द्रिय-निगृह, धन-वैभव की नश्वरता, सादा जीवन, संयमित जीवन, परोपकारिता, दया, भातृत्व आदि की प्रेरणाप्रद वाणियाँ मौजूद है, उनका मार्गदर्शन और दिशा-निर्देश आज भी प्रासंगिक है। इसलिए हम कह सकते हैं कि गोरखनाथ की सारग्रही दृष्टि ने तत्कालीन साधना, संप्रदायों के सार्थक एवं उपयोगी तत्वों को संग्रहित कर एक ऐसे योगपरक भक्ति मार्ग का प्रवर्तन किया जिसमें साधना की पवित्रता, चरित्र की परमोच्चता, संयमपूर्ण जीवन की शक्तिमत्ता, सामाजिक कुरीतियों एवं आडंबर रहित जीवन की महिमा का उद्घोष किया। अधविश्वास, कुरीतियों, आडबरों, पाखण्डों एवं शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने के कारण समाज में तिरस्कृत, पिछड़े एवं निम्न वर्गीय लोगों को भी इनकी वाणी ने एक सहारा प्रदान किया। उनकी वाणियों की जितनी उपादेयता और प्रासंगिकता तत्कालीन समय में थी, उससे कहीं ज्यादा वर्तमान समय में है। लोक साहित्य और लोक गीत, योग और साधना, धार्मिक और दार्शनिक विचार, सामाजिक सुधार में नाथ पंथ के उपदेशों और विचारों ने लोगों की सादगी, सच्चाई और सेवाभाव का जीवन जीने के लिए प्रेरित किया है। अत: गोरखनाथ हमारी भातीय ज्ञान परंपरा के वाहक है।

निष्कर्ष

अत: यह निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि नाथपंथ और गोरखनाथ भारतीय आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक सुधार और हिंदी साहित्य के विकास की एक सशक्त परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। गोरखनाथ ने नाथ संप्रदाय को संगठित स्वरुप प्रदान करते हुए हठयोग को साधना का केंद्रीय माध्यम बनाया तथा ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय-निग्रह और मानसिक–शारीरिक शुचिता पर विशेष बल दिया। उन्होंने बौद्ध वज्रयान और वाममार्गी साधनाओं में व्याप्त भोगवाद, आडंबर और अनाचार का विरोध कर संयमित एवं नैतिक जीवन-पद्धति को प्रतिष्ठित किया। साहित्यिक दृष्टि से गोरखनाथ का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। लोकभाषा, सधुक्कड़ी और खड़ी बोली के प्रयोग द्वारा उन्होंने आध्यात्मिक विचारों को जनसामान्य तक पहुँचाया और हिंदी को साहित्यिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया। उनकी रचनाओं में योग-साधना, गुरु-महिमा, निर्गुण ब्रह्म की अवधारणा, उलटबांसी और लोकोक्तियों के माध्यम से गूढ़ दार्शनिक सत्य सरल रुप में प्रस्तुत हुए। सामाजिक स्तर पर नाथ साहित्य ने अंधविश्वास, पाखंड, शोषण और सामाजिक कुरीतियों का विरोध करते हुए निम्न एवं उपेक्षित वर्गों को आत्मसम्मान और वैचारिक संबल प्रदान किया। इस प्रकार नाथपंथ और गोरख-साहित्य न केवल मध्यकालीन समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हुए, बल्कि वर्तमान समय में भी उनके विचार जीवन, समाज और संस्कृति को दिशा देने की क्षमता रखते हैं।

संदर्भ सूची

1. विवेक कुमार तिवारी : नाथ साहित्य का ऐतिहासिक विवेचन एवं आदिकालीन नाथ संप्रदाय का उद्भव : शेष संचयन (सं.योगेन्द्र प्रताप सिंह), 15 जुलाई, 2022, पृ. 53
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी: नाथ सम्प्रदाय, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 1
3. गोरक्ष-संहिता : चमनलाल गौत्तम संस्कृति संस्थान, बरेली, पृ. 126
4. रामचंद्र शुक्ल : हिंदी साहित्य का इतिहास, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 27
5. हजारीप्रसाद द्विवेदी : नाथ सम्प्रदाय, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 3
6. दीपक कुमार तिवारी : हिंदी साहित्य के संवर्धन में महायोगी गुरु गोरखनाथ जी की भूमिका : हिंदी अनुशीलन (सं.नन्दकिशोर पाण्डेय), अंक-3-4, भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयागराज, अक्टूबर-दिसंबर, 2021, पृ. 267
7. गोरखबानी, पृ. 9
8. दीपक कुमार तिवारी : हिंदी साहित्य के संवर्धन में महायोगी गुरु गोरखनाथ जी की भूमिका : हिंदी अनुशीलन (सं.नन्दकिशोर पाण्डेय), अंक-3-4, भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयागराज, अक्टूबर-दिसंबर, 2021, पृ. 269
9. वही, पृ. 97
10. वही, पृ. 268